[अनुवाद]

श्री प्रबेश्वर तांती (कालियाबोर): अध्यक्ष महोदय, निम्नलिखित मद अगले सप्ताह की कार्यसूची में शामिल किए जाएं।

असम देश में प्रमुख चाय उत्पादक राज्य है। असम केवल चाय से ही 66 प्रतिशत विदेशी मुद्रा कमाता है। असम राज्य को राजस्व की भी बहुत हानि हो रही है। अतः मेरा अनुरोध यह है कि सरकार को चाय कम्पनियों के मुख्यालयों को कलकत्ता से असम में लाये जाने के लिए गंभीरता से विचार करना चाहिए ताकि असम को राजस्व की हानि न हो।

श्री एच० के०एल० भगत: कार्य मंत्रणा समिति के लिए माननीय सदस्य का अनुरोध लिख लिया गया है।

12.11 म० प०

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव--[जारी]

अध्यक्ष महोदय: सदन में अब 23 फरवरी, 1989 को श्री वी० एन० गाडगिल द्वारा प्रस्तुत और श्री रघुनन्दन लाल भाटिया द्वारा समर्पित निम्नलिखित प्रस्ताव पर और आगे विचार किया जाएगा:--

"कि राष्ट्रपति की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए:--

'कि सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य, राष्ट्रपति के उस अभिभाषण के लिए, जो उन्होंने 21 फरवरी, 1989 को एक-साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यन्त आभारी हैं।'

माननीय प्रधान मंत्री

प्रधान मंत्री (श्री राजीव गांधी): अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम, हमारी संसदीय परम्परा को बनाए रखते हुए और हमारे विकासमान लोकतंत्र के अनुरूप राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुए उच्च कोटि के वाद-विवाद के लिए मैं माननीय सदस्यों को धन्यवाद देना चाहता हूं।

यह इस लोक सभा का अन्तिम वर्ष है।

एक माननीय सदस्य: संसद का नहीं।

श्री राजीव गांधी: मैंने लोक सभा कहा है... आपके हैडफोन में कुछ गड़बड़ी है क्या?

श्री दिनेश गोस्वामी (गुवाहटी): राष्ट्रपति महोदय ने कहा था "संसद" का।

श्री एस. जयपाल रेड्डी (महबूबनगर): सरकार के विभाग में कुछ खराबी है... **(व्यवधान)**।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: क्या हो रहा है यह, आप ऐसा क्यों करते हैं?

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी: यह समय उन चुनौतियों की ओर देखने का है जिनका हमने सामना किया है, उन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमारे कार्यों और भविष्य में किए जाने वाले कार्यों को देखने का है।

महोदय, जिस दृष्टिकोण ने हमारा मार्गदर्शन किया है वह दृष्टिकोण गांधी जी, पण्डित जी और इन्दिरा जी द्वारा तैयार किया गया था। इन्हीं आधारों पर हमने इन चुनौतियों का सामना किया है। भारत की एकता और अखण्डता को मजबूत करने के लिए हमारा संघर्ष जारी है।

यदि आप उस समय पर दृष्टि डालें जब यह लोक सभा निर्वाचित हुई थी तो आप पाएंगे कि इन्हीं आधारभूत प्रश्नों पर पूरे देश में हर व्यक्ति के दिमाग में बहुत से संदेह और प्रश्न विद्यमान थे। आज यह भय पूरी तरह समाप्त हो चुका है ।

हमारा संघर्ष गरीबी और बेरोजगारी हटाने के लिए है। हमने इन वर्षों के दौरान विश्व में भारत को उचित स्थान दिलाने के लिए कार्य किया है। हमने बहुत से क्षेत्रों में कार्य किया है ; सबसे पहला और महत्वपूर्ण कार्य शान्ति और स्थिरता कायम करने का है क्योंकि शान्ति और स्थिरता के बिना विकास नहीं हो सकता— और यह शान्ति और स्थिरता राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय दोनों ही क्षेत्रों मे होनी चाहिए। हमने अपनी अर्थव्यवस्था के विकास में वृद्धि करने के लिए कार्य किया क्योंकि हमने यह महसूस किया कि इन दो मूलभूत बातों की हमारे राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यकता है। हमने असम, मिजोरम, त्रिपुरा और दार्जिलिंग क्षेत्र में — शान्ति और स्थिरता कायम की है।

एक माननीय सदस्य: पंजाब के बारे में क्या हुआ?

श्री राजीव गांधी: धीरज रखिए। मैं पंजाब के बारे में भी विस्तार से बात करूंगा।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा): बोडो आन्दोलन भी चल रहा है।

अध्यक्ष महोदय: कृपया व्यवधान उत्पन्न न करें।

[हिन्दी]

श्री राजीव गांधी: छोटी चीजों से खुश हो जाते हैं साहब, खुश होने दो।

[अनुवाद]

महोदय, पड़ौसी देशों को लें तो अफगानिस्तान की स्थिति सामान्य हो रही है। हमने चीन के साथ तनाव कम किया है और कुछ हद तक पाकिस्तान तथा श्रीलंका के साथ भी तनाव में कमी आई है। जो देश उग्र थे अब तेजी से सामान्य होते जा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो सोवियत संघ और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बीच बातचीत, जो पूर्णतः बंद हो चुकी थी, फिर से शुरू हो गई है। निरस्त्रीकरण विषय पर बातचीत जारी है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर छाए तनाव के बादल धीरे-धीरे छंट रहे हैं। हमने इस अवधि के दौरान नई विश्व व्यवस्था; नए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति संबंधों, निरस्त्रीकरण संबंधी नए सैनिक संबंधों और नए आर्थिक संबंध कायम करने के लिए कार्य किया है।

राष्ट्रीय स्तर पर हमारी अर्थव्यवस्था ने मूलतः दो बातों पर ध्यान दिया है — गरीबी हटाने और बेरोजगारी कम करने पर। इस कार्य के लिए हमें तीव्र विकास की आवश्यकता थी क्योंकि तीव्र विकास के बिना हम इन दो पेचीदा क्षेत्रों में निवेश के लिए आवश्यक संसाधनों का विकास नहीं कर सकते थे। हमने विकास को शृंखलाबद्ध रूप से बढ़ाने के रूप में और विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में गरीबों के काम में लायी जाने वाली प्रौद्योगिकी और विज्ञान की खोज की। हमने वितरण प्रणाली की जाँच की और वितरण प्रणाली को सरल तथा कारगर बनाया ताकि हमारे कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली ढंग से कमजोर वर्गों के घरों तक पहुँचें। मुख्यतः हमने अपनी अर्थव्यवस्था को इतना शक्तिशाली बना दिया है कि यह अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता करने लगी है। हमारे निर्यातकों में अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियों का मुकाबला करने की क्षमता होना इसका प्रमाण है। हमने इन चुनौतियों का सामना नए दृष्टिकोणों को आधार बनाकर किया है और हमें इसके उत्साहवर्धक नतीजे प्राप्त हुए हैं।

जैसा कि मैंने कहा राष्ट्रीय, प्रादेशिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव कम हुआ है। हमारी अर्थव्यवस्था ने कठिन परिस्थितियों में ठीक कार्य किया है। उत्तर-पूर्व में हमने विद्रोह लगभग पूरी तरह समाप्त कर दिया है।

[श्री राजीव गांधी]

हमने विद्रोहियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की। हमने उन्हें कोई छूट नहीं दी। यद्यपि हमने उन्हें यह बताया कि सरकार केवल दो शर्तों पर उनसे बातचीत करने और उनकी बात सुनने के लिए तैयार है। पहली शर्त यह कि हिंसा का मार्ग छोड़ना होगा और दूसरी यह कि बातचीत केवल संविधान के अन्तर्गत होगी। हमने यह कहा कि समस्याओं के समाधान बिना कोई आशोधन किए वर्तमान व्यवस्था के भीतर ही संभव हैं। हमने यह दर्शाया कि हम समस्याओं के समाधान के लिए राष्ट्रीय हित की खातिर पार्टी हित को छोड़ देंगे। हमने उत्तर-पूर्व में पूर्व लोकतांत्रिक भागीदारी कायम की है। प्रश्न यह नहीं है कि विपक्ष या कॉंग्रेस चुनाव जीतेगी या हारेगी। महत्वपूर्ण बात यह है कि लम्बे अर्से के बाद उत्तर-पूर्व के लोगों को अपना निर्णय लेने का अवसर मिला। हमने उत्तर-पूर्व में लोकतंत्र प्रारंभ किया है। हमने शान्ति और स्थिरता तथा विकास के लिए अनुकूल स्थिति बनाई है। हमने उन व्यक्तियों को, जो अभी भी मुख्यधारा से अलग हैं और जो व्यवस्था से बाहर हैं, अन्य लोगों की भांति ही हिंसा त्यागकर संविधान के भीतर उनकी समस्याओं का हल ढूंढ़ने के लिए मिल कर कार्य करने का प्रस्ताव रखा है।

असम में एक नई समस्या का जन्म हो रहा है। इस समस्या का ध्यान असम सरकार को रखना चाहिए। गृह मंत्रालय उन्हें सभी संभव सहायता देगा। महोदय, इन चार वर्षों में पंजाब की समस्या ही कठिन रही है। पंजाब में हमने आतंकवाद के लिए कोई छूट नहीं दी है।

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: रोडे के बारे में क्या विचार है?

श्री राजीव गाँधी: आतंकवादियों के साथ पहले कभी इतनी सख्ती नहीं बरती गई है। हमने शान्ति कायम करने के लिए सबके साथ मिलकर कार्य किया है। हमने एक राजनैतिक प्रक्रिया शुरू की है। इसकी असफलता का कारण यह है कि जिन लोगों के पास अधिकार थे वे आतंकवादी शक्तियों के खिलाफ लड़ना नहीं चाहते थे। महोदय, हमारा इरादा पक्का है और पंजाब के लोगों ने हमारा साथ दिया है। मैं एक क्षण के लिए उन सभी शहीदों और देश भक्तों की याद करता हूं जिन्होंने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए पंजाब में अपने जीवन का बलिदान किया। मैं इस अवसर पर उन विपक्षी दलों का भी धन्यवाद करना चाहता हूं जिन्होंने पंजाब में अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में हमारे साथ काम किया है। मैं विशिष्ट रूप से पंजाब के दो कम्यूनिस्ट दलों की बात कर रहा हूं।

साथ ही मैं यह भी कहना चाहूँगा कि ऐसा भी समय था जब हमें कुछ वर्गों से इस प्रकार का समर्थन नहीं मिला। खासकर पंजाब के कुछ राजनैतिक दलों से जिनसे हम ऐसी उम्मीद रखते थे। महोदय एक उदाहरण लीजिए। हमें विपक्षी दलों से "ब्लैक थंडर" जैसे स्पष्ट विषय पर भी एकमत समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। क्या कोई प्रश्न पूछा जा सकता है? परंतु हमें पूर्ण समर्थन नहीं मिला। विरोधी पक्ष में कुछ ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने यह कहा था कि 'ब्लैक थंडर' गलत था। मुझे बहुत दुख है। फिर आजकल कुछ व्यक्ति सिख राज्य के बारे में चर्चा कर रहे हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि विरोधी पक्ष के कुछ सदस्य यह नहीं जानते कि वे पिछले कुछ दिनों से किस बात का समर्थन कर रहे हैं।

मैं कुछ प्रश्न पूछना चाहूंगा। महोदय, क्या मैं एक पुस्तिका के कुछ भाग को पढ़कर सुना सकता हूं। मैं समझता हूं कि इस छोटी सी पुस्तिका को विपक्षी दलों के कुछ सदस्यों ने प्रकाशित किया है। इसमें उल्लेख है, "पंजाब समस्या के समाधान के लिए, स्वतंत्रता से पहले निष्ठापूर्वक की गई वचनबद्धता"— मुझे ऐसी निष्ठापूर्वक वचनबद्धता की जानकारी नहीं है कि— "भारत में एक स्वायत्तशासी सिख राज्य के निर्माण के लिए इसका आदर किया जाना चाहिए।" **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: वे क्या पढ़ रहे हैं?

[हिन्दी]

श्री नारायण चौबे (मिदनापुर): क्या किताब है, किसने लिखी है? **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी: इस पुस्तिका का नाम 'दि सिख केस' है। इसे पंजाब के भारत मुक्ति मोर्चा ने तैयार किया है। **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आप शोर क्यों कर रहे हैं?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: मैं उनसे पूछूंगा। कृपया बैठिये।

(व्यवधान)

श्री वी० शोभनाद्रीश्वर राव (विजयवाड़ा): उन्होंने यह कहा है कि यह विषय दलगत बातों से ऊपर होना चाहिए। क्या यह दलगत बातों से ऊपर है? **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: मुझे सदन के माननीय सदस्यों को यह याद दिलाना चाहिए.... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: क्या कर रहे हैं आप?

[अनुवाद]

श्री सैफुद्दीन चौधरी (कटवा): उन्हें लेखक का नाम बताना चाहिए.... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: वह बता रहे हैं, आप बताने दें, तो न। आप चुप नहीं करते हैं।

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी: यदि आप मुझे अवसर दें तो मैं नाम बता दूंगा। **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: भई, यही तो बता रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: यही तो बता रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: आप तशरीफ रखिए।

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी: पहली बात मैं यह कहना चाहूंगा कि जब मैं विरोधी पक्ष के सदस्यों की बात करता हूं तो मेरा अभिप्राय विरोधी पक्ष के सदस्यों से होता है, न कि दोनों सदनों के विरोधी पक्ष से। जब मैं सदन के विरोधी पक्ष के सदस्यों की बात करता हूं तो मेरा अभिप्राय इस सदन के विरोधी पक्ष के सदस्यों से होता है। परंतु कृपया इस बात को समझिये लेकिन, विपक्ष के सदस्य जब मैं यह कहता हूं कि मैं विरोधी पक्ष के उन लोगों को भी सम्मिलित कर रहा हूं जो कि सदन में उपस्थित नहीं हैं परंतु जिन्होंने समय-समय पर अपने दृष्टिकोण व्यक्त किये हैं। महोदय, मैं पढ़ना चाहूंगा.... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आप शोर क्यों करते हैं?

[अनुवाद]

श्री वी॰ शोभनाद्रीश्वर राव: आप सदन के बाहर लोगों में यह धारणा स्थापित नहीं कर सकते कि विरोधी पक्ष इसका समर्थन कर रहा है। महोदय, वे इस प्रकार की टिप्पणी क्यों करते हैं?

श्री नारायण चौबे: वे प्रत्येक बात को एक साथ ले रहे हैं। वे गलती पर हैं।

श्री राजीव गांधी: मैं इस पुस्तिका की प्रस्तावना के पहले वाक्य को पढ़ रहा हूं। संसद सदस्य श्री राम जेठमलानी के कहने पर भारत मुक्ति मोर्चा की पंजाब इकाई ने इस पुस्तिका को तैयार किया था।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आप क्या कर रहे हो?

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी: "यह सामान्य जनता और विशेष रूप से विरोधी पक्ष के नेताओं के सामने पंजाब समस्या को प्रस्तुत करने और उचित और शांतिपूर्ण समाधान का सुझाव देने का प्रयास है।"

फिर प्रस्तावना के अंतिम वाक्य में उल्लेख किया गया है: "श्री राम जेठमलानी, जिन्होंने मसौदे को पढ़ा और लाभकारी सुझाव दिये, को विशेष धन्यवाद का श्रेय जाता है।" अब मैं, उचित और शांतिपूर्वक समाधान के लिए विपक्ष के नेताओं के समक्ष प्रस्तुत किये गये सुझावों की बात पर आता हूं। पहला सुझाव यह दिया गया है.... **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: हमने यह पुस्तक नहीं देखी है। सम्भवतः इस पुस्तिका को 'आर॰ ए॰ डब्ल्यू॰' गृह मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किया गया है।

अध्यक्ष महोदय: यहां देखिये । आप इसे अस्वीकार कर सकते हैं, इससे इन्कार कर सकते हैं । परन्तु जो बात छपाई में है वह छपाई में है।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी: महोदय, मैं यह उल्लेख करने का प्रयास कर रहा था ... **(व्यवधान)** महोदय, पहले ... **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: वे गलत उल्लेख करने का प्रयास कर रहे है ।**(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: मैं आपको केवल यह दर्शाने का प्रयास कर रहा हूं कि कुछ ऐसी बातें भी हैं जिनकी सम्भवतः आपको जानकारी नहीं है और **(व्यवधान)**

श्री बसुदेव आचार्य: हमें इसकी जानकारी है । हम इसे अस्वीकार कर चुके हैं। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: फिर मैं इसी मुद्दे के बारे में बात कर रहा था।

श्री के॰ पी॰ उन्नीकृष्णन (बडागरा) हम एक सन्त के रूप में भिंडरवाले के बारे में आपके मूल्यांकन को भी रद्द कर चुके हैं।

श्री राजीव गांधी: इसमें यह उल्लेख किया गया है कि पहले...... महोदय, मुझे समाधान को पढ़कर सुनाने दीजिए। **(व्यवधान)**

श्री सैफुद्दीन चौधरी: आप जो कुछ पढ़ रहे हैं उसे हम अस्वीकार कर चुके हैं। **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आपने तो रिजैक्ट कर दिया है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: आप सुन लीजिए । शोर क्यों करते है?

[अनुवाद]

क्या आप बैठेंगे?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आपको क्यों तकलीफ हो रही है?

[अनुवाद]

अब आप इससे सम्बन्धित नहीं है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आपको क्यों तकलीफ हो रही है?

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी:मुझे यह पढ़ने दीजिए और मैं आपको यह बताऊंगा कि मैं क्या करने का प्रयास कर रहा हूं।**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री हरीश रावत (अल्मोड़ा): यह किस की सपोर्ट से जीत कर आये हैं यह बता दें।**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय: आप अपनी बात पर आइये।

श्री राजीव गांधी: उसी पर आ रहा हूं।

[अनुवाद]

महोदय सुझाव ये है "सबसे पहले भारत में एक स्वायत्तशासी सिख राज्य के निर्माण के लिए स्वतंत्रता से पहले की गई निष्ठापूर्वक वचनबद्धता का आदर किया जाना चाहिए।"

क्या हम वास्तव में ऐसा चाहते हैं? दूसरे "धर्म और राजनीति को अलग करने वाले कानूनों को रद्द कर दीजिये।"

क्या हम ऐसा चाहते हैं?

महोदय, तीसरा सुझाव 'स्थाई समाधान' के शीर्षक के अन्तर्गत है **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आपको क्यों तकलीफ हो रही है।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी: महोदय, कभी-कभी सच्चाई को पचाना कठिन होता है।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आप कैसे आदमी है जो बीच में बोलते हैं।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

प्रो० मधु दंडवते (राजापुर): अध्यक्ष महोदय, यदि प्रधान मंत्री महोदय मुझे एक सैकिंड के लिए हस्तक्षेप करने की अनुमति दे

श्री राजीव गांधी: नहीं महोदय, इस समय नहीं।

प्रो० मधु दंडवते: ठीक है। धन्यवाद।

श्री राजीव गांधी: धन्यवाद दंडवते जी।

प्रो॰ मधु दंडवते: आपकी गुस्ताखी के लिए धन्यवाद। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: महोदय, यह स्थाई समाधान है ... "भारत मे एक स्वायत्तशासी राज्य के निर्माण का कोई विकल्प न होने के कारण विरोधी पक्ष के नेताओं को इसके ढांचे के बारे में विचार विमर्श करना चाहिए।" और आगे यह उल्लेख है "अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियन्त्रण सहित इसे पूर्ण आन्तरिक स्वायत्तता प्राप्त होनी चाहिए। केन्द्रीय विषयों में केवल रक्षा, विदेशी मामले, संचार और मुद्रा ही सम्मिलित होने चाहिएं ।" महोदय, क्या यह आनन्दपुर प्रस्ताव से अलग बात है। **(व्यवधान)** इस पूरी किताब में ऐसे एक भी व्यक्ति का उल्लेख नहीं किया गया है जिसकी आतंकवादियों ने हत्या की है। भारत की एकता और अखडंता के लिए शहीद होने वाले किसी भी व्यक्ति का उल्लेख इसमें नहीं किया गया है। **(व्यवधान)** महोदय, इस पुस्तक से केवल जहर फैलता है। **(व्यवधान)**

महोदय, मैं यह प्रश्न पूछ रहा हूँ कि जिस व्यक्ति ने इस पुस्तक का समर्थन किया है उस व्यक्ति के मित्रों ने उसके विरुद्ध क्या कार्यवाही की है? क्या वह कुछ विरोधी दलों के सहयोग से निर्वाचित नहीं हुआ है? **(व्यवधान)**

प्रो॰ मधु दंडवते: वे प्रश्न पूछते हैं और हमें हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं देते हैं। वे प्रश्न पूछते हैं परन्तु उसका उत्तर नहीं चाहते। **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: महोदय, एक व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री राजीव गांधी: कुछ सदस्यों ... **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: महोदय, क्या वे हमें बोलने की अनुमति दिये बिना वक्तव्य देना जारी रख सकते हैं? वे आधारहीन और दुर्भावनाशील वक्तव्य देकर कैसे बच सकते हैं। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: मैं उस पुस्तक की विषय-वस्तु के बारे में तर्क-वितर्क नहीं करना चाहता। **(व्यवधान)** मैं विपक्ष के सदस्यों द्वारा उस भद्रपुरूष के विरुद्ध कार्यवाही की प्रत्याशा कर रहा हूं। मैं यही देखना चाहता हूं **(व्यवधान)**

श्री हन्नान मोल्लाह (उलूबेरिया): विपक्ष के विरुद्ध उनके इस आरोप का क्या आधार है?

श्री राजीव गांधी: महोदय, मैं विपक्ष के विरुद्ध कोई आरोप नहीं लगा रहा हूं ... **(व्यवधान)** मैं विपक्ष से उस भद्रपुरूष के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए कह रहा हूं और यह स्पष्ट करने के लिए ... महोदय, मैं केवल यही कर रहा हूं।

प्रो॰ मधु दण्डवते: वे यह प्रश्न पूछते हैं कि आपने क्या कार्यवाही की है परन्तु वे यह नहीं चाहते कि मैं हस्तक्षेप करूं और उन्हें स्पष्ट रूप से यह बताऊँ ... ताकि यह सम्पूर्ण विवाद शेष रहे।

श्री राजीव गांधी: महोदय, उन्हें उत्तर देने का अवसर दिया जायेगा। **(व्यवधान)**

श्री बसुदेव आचार्य: कब?

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: फिर देंगे आपको।

[अनुवाद]

उन्होंने ऐसा कहा है।

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: अभी-अभी।

प्रो॰ मधु दंडवते: मैं आपकी अवज्ञा करके हस्तक्षेप नहीं करूंगा परन्तु मुझे विपक्ष की स्थिति स्पष्ट करने का एक अवसर दिया जाना चाहिए। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: एक अथवा दो माननीय सदस्यों ने ... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: आप अकेले आदमी खराब कर रहे हैं; बैठ जाइये। आपको पहले मौका मिला है, आपने बहुत कुछ कहा है, अब इनको कह लेने दीजिए। कल सारा दिन मैंने आपको दिया, आप नहीं आये, फिर भी मैंने कल सारा दिन आपको दिया।

[अनुवाद]

कृपया बैठ जाइए। मैंने आपको बोलने के लिए कल पूरा दिन दिया था। अब उन्हें बोलने दीजिए। कल मैंने आपको पूरा दिन दिया, आप नहीं आए, लेकिन फिर भी मैंने आपको अनुमति दी। हम विचार करेंगे। लेकिन इस तरह से नहीं करेंगे। आपको पर्याप्त समय मिलेगा। आपको पर्याप्त समय की अनुमति दी गई थी। आपको पर्याप्त समय दिया गया है। आपको पर्याप्त समय दिया जाए। अब आप बैठ जाइए। **(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य की तरह बर्ताव कीजिए। कृपया बैठ जाइए। जयपाल रेड्डी जी, आप अत्यधिक उग्र हो रहे हैं। कृपया बैठ जाइए। अब आप कृपया बैठ जाइए अन्यथा मैं आपका नाम लूंगा। आप बैठ जाइए। आप मेरे धैर्य की काफी परीक्षा ले चुके हैं। अब कृपया बैठ जाइए। **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: आप प्रधान मंत्री का नाम लीजिए।

अध्यक्ष महोदय: मैं आपका नाम लूंगा। कृपया बैठ जाइए। क्या आप बैठेंगे? **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: यदि माननीय सदस्य इसका उत्तर देने के लिए समय चाहते हैं तो मैं विपक्ष के कुछ सदस्यों द्वारा आतंकवादियों के साथ संबंधों पर वाद विवाद के लिए तैयार हूं। मैं वाद विवाद के लिए तैयार हूं। मैं आपको काफी समय दूंगा।

डा॰ दत्ता सामंत (बम्बई दक्षिण-मध्य): महोदय, इस पर हम अभी वाद विवाद करते हैं। काफी हो चुका। **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: महोदय, अभी और यही पर प्रारम्भ करते हैं। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी: मैंने कुछ सदस्यों के बारे में कहा है, आर्चाय जी आपके बारे में नहीं कहा। **(व्यवधान)**

श्री एस॰ जयपाल रेड्डी: हमें अभी और यहीं वाद विवाद करना चाहिए **(व्यवधान)**

श्री बसुदेव आर्चाय: जब आप विपक्ष के सदस्यों पर आरोप लगा रहे हैं ...

श्री राजीव गांधी: आर्चाय जी, इसमें आप सम्मिलित नहीं हैं। **(व्यवधान)**

यह आवश्यक नहीं है कि इसमें संसद सदस्य ही है। मैं कह रहा हूं कि: विपक्ष के सदस्य। **(व्यवधान)**

मैं बताना चाहता हूं मैंने किसी पर आरोप नहीं लगाया है। मैंने एक विशेष मुद्दा उठाया है। मैं इसपर कार्यवाही चाहूंगा। मैंने इस बारे में कार्यवाही नहीं देखी है। **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय: देखिए। कुछ शिष्टता होती है। जयपाल रेड्डी जी आप सीमाएं लांघ रहे हैं।

[हिन्दी]

आप लोग शोर क्यों कर रहे हैं? क्यों बोल रहे हैं बीच में?

[अनुवाद]

अब आप बेहतर बर्ताव कीजिए। मैं आपको एक अवसर देता हूं। **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय: आपको एक अवसर दिया जाएगा। आप नहीं सुन रहें हैं। हम हर समय चिल्लाते ही रहते है। आप अत्यधिक अशांत हो रहे हैं और यह उचित तरीका नहीं है। आप बैठ क्यों नहीं जाते हैं?

(व्यवधान)